

अल्बर्ट हबर्ड

अ मैसेज टु गार्शिया

सफल करियर, तेज तरक्की



अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

अ मैसेज टु गार्शिया

सफल करियर, तेज तरक्की

लेखक: अल्बर्ट हर्बर्ट

अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

अध्याय सूची

[प्रस्तावना](#)

[सौ बातों की एक बात](#)

[‘अ मैसेज टु गार्शिया’ कैसे लिखा गया?](#)

[गार्शिया को संदेश](#)

[मिशन पूरा करना सीखें](#)

[कर्मचारी सौ प्रतिशत प्रयास नहीं करते](#)

[प्रमोशन क्यों नहीं मिलता है?](#)

[कामचोरी से सफलता नहीं मिलती](#)

[बहाने नहीं, उपाय खोजें](#)

[योग्यता सफलता की अनिवार्य शर्त है](#)

[अपनी प्रगति या छँटनी के लिए आप खुद जिम्मेदार हैं](#)

[किन कर्मचारियों की छँटनी होती है?](#)

[उद्यमी कर्मचारी कंपनी की धुरी होते हैं](#)

[क्या आप गार्शिया तक संदेश पहुँचा सकते हैं?](#)

प्रस्तावना

यह पुस्तक प्रख्यात लेखक अल्बर्ट हर्बर्ट के अमर लेख 'अ मैसेज टु गार्शिया' का हिंदी अनुवाद है। यह पुस्तक आज से 120 साल पहले लिखी गई थी, लेकिन इसमें जो बातें बताई गई हैं, वे आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी कि तब थीं। कहानी छोटी सी है, लेकिन इसमें बड़े असरदार तरीके से बताया गया है कि करियर में सफल होने और तेज तरक्की करने के लिए इंसान में कौन से गुण होने चाहिए और उसे क्या करना चाहिए।

आधुनिक युग के पाठकों की सुविधा की दृष्टि से मैंने लेखक की बातों को थोड़े विस्तार से स्पष्ट किया है तथा आधुनिक युग के अनुरूप बनाया है। मूल संदेश वही है, लेकिन इसे संशोधित और विस्तृत संस्करण की तरह लें, क्योंकि इसमें मैंने इक्कीसवीं सदी के लिए अल्बर्ट हर्बर्ट की नसीहतों का विस्तार भी किया है।

डॉ. सुधीर दीक्षित

सौ बातों की एक बात

अगर आप किसी कंपनी या इंसान की नौकरी करते हैं, तो भगवान के नाम पर पूरी ईमानदारी से नौकरी करें। सचमुच उसकी खातिर मेहनत करें। पूरी ईमानदारी से, पूरी लगन से, पूरे समर्पण से। यह न भूलें कि वह आपको पैसे दे रहा है, जिनकी बदौलत आपको खाने-पीने को मिल रहा है, आप जरूरत के सामान खरीद पा रहे हैं, आपकी रोजी-रोटी चल रही है और आपके बच्चे स्कूल-कॉलेज में पढ़ रहे हैं। अगर वह आपको वेतन दे रहा है, जिससे आपके घर का खर्च चल रहा है और आप सुख-सुविधा भरी जिंदगी जी रहे हैं, तो यह आपका कर्तव्य है कि आप उसकी खातिर पूरी मेहनत से काम करें, उसके बारे में अच्छा बोलें, उसके बारे में अच्छे विचार रखें और हर समय अपने मालिक तथा अपनी कंपनी का साथ दें। सारांश यह है कि आप जिस कंपनी में काम करते हैं, उसे अपनी खुद की कंपनी मानें तथा उसकी प्रगति के बारे में हर पल सोचते रहें, क्योंकि अगर वह तरक्की करेगी, तभी आप तरक्की करेंगे।

मुझे लगता है कि अगर मैं किसी की नौकरी करूंगा, तो मैं सचमुच दिलोजान से मेहनत करूंगा। मैं ऐसा नहीं करूंगा कि आठ घंटे की नौकरी में केवल दो घंटे ही काम करूँ या केवल चार घंटे ही काम करूँ और बाकी समय सोशल मीडिया पर चैटिंग करता रहूँ या मैसेज भेजता रहूँ या चाय पीता रहूँ या सर्फिंग करता रहूँ या किसी दूसरी तरह से मक्कारी या कामचोरी करता रहूँ। मैं तो पूरे समय काम करूंगा, यानी आठ घंटे। और जरूरत पड़ी तो उससे भी ज्यादा। अगर मैं पूरा वेतन चाहता हूँ, तो मुझे पूरे समय काम भी करना चाहिए। अगर बाँस तीस दिन में से मेरी एक दिन की भी तनख्वाह काट दे, तो मैं भड़क जाऊँगा। लेकिन अगर मैं एक दिन के काम में एक घंटा बरबाद कर दूँ, तो क्या बाँस को नहीं भड़कना चाहिए? कामचोरी भी एक तरह की अनैतिकता है, क्योंकि हम जो नमक खा रहे हैं, उसका हक अदा नहीं कर रहे हैं। इसलिए कंपनी या बाँस मुझे जितने काम के पैसे देता है, मैं उतना पूरा काम करूंगा, बल्कि उससे भी ज्यादा करूंगा। अगर मुझे लगता है कि मेरे मालिक या कंपनी के हित में मुझे इससे ज्यादा काम करने की जरूरत है, तो मैं उसे भी करूंगा। सही मायने में देखा जाए, तो सौ ग्राम वफादारी का मूल्य एक किलो चतुराई के बराबर होता है। इसलिए मैं अपने काम में वफादारी और चतुराई दोनों का मिश्रण करूंगा, ताकि मेरी कंपनी सफल हो, क्योंकि कंपनी की सफलता में ही मेरी सफलता छिपी हुई है।

मान लें, इसके बावजूद आप अपनी कंपनी या अपने मालिक की बुराई करना चाहते हैं! अगर आपको हमेशा उनकी निंदा ही करना है, बुरा ही बोलना है और आलोचना ही करना है, तो मैं आपको इसका एक आसान उपाय बताता हूँ। एक पल की भी देर न करें और अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दें! अपनी कंपनी से त्यागपत्र दे दें! और जब आप कंपनी छोड़कर बाहर निकल जाएँ, तो इसे जी भरकर कोसें। लेकिन मेरा आपसे अनुरोध है कि जब तक आप किसी कंपनी का नमक खा रहे हैं, तब तक उसकी बुराई न करें। जब तक आप किसी कंपनी का हिस्सा हैं, उसे न कोसें। इस तरह आप न सिर्फ उस कंपनी को नुकसान पहुँचाएँगे, बल्कि खुद को भी पहुँचाएँगे। इससे आप नमकहराम की श्रेणी में भी आ जाएँगे, जो जिस थाली में खाता है, उसी में छेद करता है। सिर्फ इतना ही नहीं, जब आप अपनी कंपनी की बुराई करते हैं, तो आप खुद की भी बुराई कर रहे हैं, क्योंकि आप भी तो उसका हिस्सा हैं। और यह न भूलें - कारोबार में 'मैं भूल गया' नहीं चलता है।

‘अ मैसेज टु गार्शिया’ कैसे लिखा गया?

यह छोटा सा लेख ‘अ मैसेज टु गार्शिया’ मैंने रात के खाने के बाद एक घंटे में लिखा था। यह 22 फरवरी 1899 की बात है, जब वॉशिंगटन का जन्मदिन था। हम ‘फिलिस्टाइन’ के मार्च अंक को प्रकाशन के लिए प्रिंटिंग प्रेस में भेजने ही वाले थे। ईमानदारी से कहूँ, तो यह लेख अचानक ही मेरे दिल की गहराइयों से निकला और कागजों पर लिखा गया। मैंने इसे लिखने के बारे में पहले से कुछ नहीं सोच रखा था। यह तो त्वरित सृजन था, जिसका जन्म अचानक और बिना किसी योजना के हुआ था।

शायद यह मेरे अवचेतन मन से निकला था, जैसे कॉलेरिज की ‘कुबला खान’ निकली थी या फिर यह कोई ईश्वरीय प्रेरणा थी, जिसने मुझे इस लेख को एक ही बैठक में लिखने पर मजबूर कर दिया था। वैसे देखा जाए, तो वह दिन कुछ लिखने के लिए अनुकूल नहीं था। दरअसल मेरा वह दिन काफी परेशानी भरा रहा था और मैं थोड़े कर्तव्यभ्रष्ट गाँव वालों को सिखा रहा था कि वे अपनी निष्क्रिय अवस्था छोड़ दें, अपनी कामचलाऊ व कामटालू प्रवृत्तियाँ त्याग दें और सुपरमैन बनकर पूरी ताकत से काम करें।

मैं उन्हें सिखा रहा था कि अगर वे ढंग से काम नहीं करेंगे, तो कुछ समय बाद उनके पास कोई काम ही नहीं होगा, क्योंकि उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा और नौकरी से सबसे पहले उन्हीं लोगों को निकाला जाता है, जो कामचलाऊ या कामटालू प्रवृत्ति रखते हैं। उस इंसान को नौकरी से कभी नहीं निकाला जाता, जो पूरे समर्पित भाव से काम करता है, जीजान से मेहनत करता है, अपने बॉस के काम को अपना काम मानता है और काम करते समय न तो घड़ी देखता है, न ही यह सोचता है कि उसके काम के बदले में उसे पर्याप्त वेतन मिल रहा है या नहीं (और यकीन मानें! अगर वह कर्मचारी पूरे समय मन लगाकर काम करता रहे, तो उसके वेतन के बारे में उसका बॉस देर-सबेर बेचने पर मजबूर हो जाएगा)।

बाकी कर्मचारी जितना काम करते हैं, वह उससे दोगुना काम करता है और वह भी खुशी-खुशी। वह एक मील आगे तक जाकर काम करता है। उससे जितना करने को कहा जाता है, उसे वह पूरी ईमानदारी से ही नहीं करता है, बल्कि वह उससे आगे तक जाता है और एक-दो अतिरिक्त काम कर देता है, ताकि उसके बॉस को असुविधा न हो। अगर बॉस उसे एक काम बताता है, तो वह दो काम करता है। अगर बॉस उसे कोई काम दस दिन में पूरा करने को कहता है, तो वह उसे चार दिन में ही पूरा कर देता है। यानी वह बॉस की उम्मीदों से आगे तक जाकर काम करता है और जब तरक्की देने का समय आएगा, तो बताएँ कि बॉस किस कर्मचारी को तरक्की देगा। जो कर्मचारी बॉस की उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन करता है और लगातार करता है, उसे प्रमोशन मिलना लगभग तय है।

जब भी बॉस कर्मचारी को कोई काम सौंपता है, तो हमारा यह आदर्श कर्मचारी यह समझने की कोशिश करता है कि बॉस क्या चाहता है, बॉस इसे कैसा चाहता है, बॉस इसे क्यों चाहता है, बॉस इसे कब तक चाहता है। बॉस के आदेश को भली-भाँति समझने के बाद वह योजना बनाता है कि उस काम को जल्दी से जल्दी और अच्छी से अच्छी तरह कैसे किया जा सकता है। और फिर वह उस काम में तब तक जुटा रहता है, जब तक कि वह काम अच्छी तरह पूरा न हो जाए। ऐसा कर्मचारी बिरला होता है और अगर कंपनी में प्रमोशन मिलता है, तो उसी को मिलता है और बार-बार मिलता है।

यह लेख लिखने का विचार मेरे मन में आसमान से नहीं टपका था। यह विचार तो एक छोटी बहस के कारण मेरे दिमाग में आया था। चाय पीते समय मेरे बेटे बर्ट ने कहा कि क्यूबा के युद्ध का असली हीरो और कोई नहीं, बल्कि रोवन था। यह रोवन ही था, जिसने उस युद्ध में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे खतरनाक काम किया था। वह अकेला ही दुश्मन देश की सीमाओं के भीतर गया था और उसने वह खतरनाक काम किया था, जो कोई दूसरा व्यक्ति नहीं करना चाहता था - वह गार्शिया के नाम संदेश लेकर गया था और उसे उस तक पहुँचाया था, जिससे अमेरिका की जीत सुनिश्चित हो गई थी।

उसकी यह बात मेरे दिमाग में बिजली की कौंध की तरह घुस गई! हाँ, लड़का बिलकुल सही कह रहा है। हीरो वही इंसान होता है, जो अपना काम बखूबी पूरा करता है - जो गार्शिया तक संदेश पहुँचाता है। मैं टेबल से उठा और मैंने 'अ मैसेज टु गार्शिया' लिख दिया। एक दिलचस्प बात बताना चाहूँगा। मैंने यह लेख 'फिलिस्टाइन' पत्रिका के मार्च अंक में छाप तो दिया, लेकिन मैंने इसके महत्व को इतना कम आँका था कि हमने इसे पत्रिका में बिना शीर्षक के छपा था।

जब पत्रिका बाजार में पहुँची, तो जल्दी ही 'फिलिस्टाइन' के मार्च अंक की अतिरिक्त प्रतियों के ऑर्डर आने लगे - एक दर्जन, पचास, सौ। जब अमेरिकन न्यूज कंपनी ने मार्च अंक की एक हजार प्रतियों का ऑर्डर दिया, तो मैंने अपने एक सहायक से पूछा कि हमारी पत्रिका में ऐसा कौन सा लेख छपा था, जिसने पूरे अमेरिका में धूम मचा दी थी।

उसने कहा, 'यह गार्शिया वाला लेख है।'

और फिर अगले ही दिन न्यूयॉर्क सेंट्रल रेलरोड के जॉर्ज एच. डेनियल्स का टेलीग्राम आया, जिसमें लिखा था: 'रोवन वाले लेख को पैफलेट के रूप में छापने के लिए एक लाख प्रतियों की कीमत बताएँ - जिसके पीछे एम्पायर स्टेट एक्सप्रेस विज्ञापन हो - यह भी बताएँ कि आप ये प्रतियाँ कितनी जल्दी भेज सकते हैं।'

मैंने जवाब में कीमत तो बता दी, लेकिन यह भी लिखा कि पैफलेट छापकर भेजने में हमें दो साल लग जाएँगे। हमारी क्षमता सीमित थी, हमारी मशीनें छोटी थीं और एक लाख बुकलेट छापने का काम हिमालय पर चढ़ने जितना कठिन लग रहा था।

जाहिर है, मि. डेनियल्स दो साल तक इंतजार करने को तैयार नहीं थे। परिणाम यह हुआ कि मैंने मि. डेनियल्स को यह अनुमति दे दी कि वे वह लेख अपने मनचाहे तरीके से खुद छाप लें। उन्होंने यह बात खुशी-खुशी स्वीकार कर ली। और उन्होंने एक लाख प्रतियाँ नहीं छपाईं। उन्होंने तो बुकलेट के रूप में पाँच लाख प्रतियों का संस्करण प्रकाशित किया। और एक बार नहीं, बल्कि दो-तीन बार। यानी दस-पंद्रह लाख प्रतियाँ! इसके अलावा यह लेख दो सौ से ज्यादा पत्रिकाओं व अखबारों में भी छपा। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इसका अनुवाद सभी लिखित भाषाओं में हो चुका है। बहुत कम लेखकों को यह सौभाग्य मिलता है और मैं इस मामले में खुद को बहुत खुशनासीब समझता हूँ।

जिस समय मि. डेनियल्स 'अ मैसेज टु गार्शिया' की लाखों बुकलेट बाँट रहे थे, उसी समय रशियन रेलवेज के डायरेक्टर प्रिंस हाइलाकोफ भी अमेरिका में थे। वे न्यूयॉर्क सेंट्रल रेलरोड के अतिथि थे और मि. डेनियल्स के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में देश का भ्रमण कर रहे थे। प्रिंस को भी यह छोटी पुस्तक दिख गई और शायद वे इसमें ज्यादा रुचि नहीं लेते, लेकिन जब उन्होंने देखा कि डेनियल्स इसकी लाखों प्रतियाँ छाप रहे हैं, तो उन्होंने इस बुकलेट में भारी रुचि ली।

रूस लौटने के बाद उन्होंने इसका अनुवाद रूसी भाषा में कराया और उन्हें यह बुकलेट इतनी पसंद आई कि उन्होंने यह रूस के हर रेलरोड कर्मचारी को बाँटवा दी।

बाकी देशों में भी यही हाल रहा। रूस के बाद यही सिलसिला जर्मनी, फ्रांस, स्पेन, तुर्की, हिंदुस्तान और चीन में भी दोहराया गया। रूस और जापान के बीच जब युद्ध छिड़ा, तो मोर्चे पर जाने वाले हर रूसी सैनिक को 'अ मैसेज टु गार्शिया' की प्रति दी गई।

जापानियों को जब रूसी कैदियों के पास बुकलेट मिली, तो वे पहले तो चौंके, लेकिन बाद में इस नतीजे पर पहुँचे कि इस बुकलेट में जरूर कोई बहुत महत्वपूर्ण संदेश होगा। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने इस बुकलेट का अनुवाद जापानी भाषा में करा लिया। बाद में मिकाडो के आदेश पर हर जापानी कर्मचारी, हर जापानी सैनिक और हर जापानी नागरिक को इसकी प्रति बाँटी गई। अब तक 'अ मैसेज टु गार्शिया' की चार करोड़ से अधिक प्रतियाँ छप चुकी हैं।

लोगों का कहना है कि पूरे इतिहास में आज तक किसी लेखक के जीवनकाल में कोई साहित्यिक पुस्तक इतनी बड़ी संख्या में नहीं छपी है - और मैं इसका श्रेय खुशकिस्मती से मिले कई संयोगों को देता हूँ।

-अल्बर्ट हबर्ड

गार्शिया को संदेश

फसल के समय में बर्फ की ठंडक की तरह, वैसा ही उनके लिए वह वफादार संदेशवाहक है, जो उसे भेजते हैं; क्योंकि वह अपने मालिकों की आत्मा को तरोंताजा कर देता है। - सूक्ति 25:13

क्यूबा के साथ हुए इस पूरे युद्ध में एक आदमी है, जो मेरी स्मृति के क्षितिज पर सबसे अलग हटकर खड़ा है, जिस तरह लिलीपुट में गुलिवर खड़ा था। वैसे तो हर मनुष्य ईश्वर की अनुपम कृति होता है... लेकिन वह अनुपम से भी अनुपम कृति था।

जब स्पेन और अमेरिका के बीच युद्ध छिड़ा, तो अमेरिका को एक बहुत महत्वपूर्ण काम करना था। इसे क्यूबा के विद्रोही नेता गार्शिया तक जल्दी से जल्दी संदेश पहुँचाना था। संदेश बहुत जरूरी था और उसे तुरंत पहुँचाना था। काम आसान नहीं था। गार्शिया का कोई निश्चित पता-ठिकाना नहीं था। उसके बारे में बस इतना पता था कि वह क्यूबा के पहाड़ों की गुफाओं में कहीं पर छिपा हुआ था - कोई भी नहीं जानता था कि कहाँ। यह संदेश उस तक पत्र या तार से नहीं भेजा जा सकता था। अमेरिका के राष्ट्रपति को उसका सहयोग हासिल करना था और वह भी जल्दी। परिस्थिति मुश्किल थी और सभी यह सोच रहे थे कि यह काम कैसे हो सकता है और इसे कौन कर सकता है।

बहुत से नामों पर विचार किया गया, कई लोगों को यह काम सौंपने की सोची गई, लेकिन किसी को भी खुद पर इतना भरोसा नहीं था कि वह इस काम को करने के लिए हाँ कर दे। जब भी किसी के सामने गार्शिया तक संदेश पहुँचाने का प्रस्ताव रखा जाता था, तो वह नानुकर करने लगता था और किसी न किसी तरह का बहाना बनाकर कन्नी काट जाता था। काम आसान नहीं था। यह बहुत मुश्किल था। अगर काम आसान होता, तो बहुत से लोग उसे करने को तैयार हो जाते। फूलों की राह पर तो कोई भी चलने को तैयार हो जाएगा। लेकिन जब अंगारों पर चलने की बात हो, तो उसके लिए बिरले ही लोग तैयार होते हैं।

अंत में किसी ने राष्ट्रपति से कहा, 'रोवन नाम का एक आदमी है, जो आपके लिए गार्शिया को खोज देगा। अगर कोई आदमी यह काम कर सकता है, तो वही कर सकता है।'

मिशन पूरा करना सीखें

रोवन को बुलाया गया और उसे वह पत्र दे दिया गया, जो उसे गार्शिया तक पहुँचाना था। यह उसका मिशन था। रोवन नाम के इस आदमी ने वह पत्र लिया, इसे मोमजामे के थैले में बंद किया, इसे अपने दिल के ऊपर बाँधा, चार दिनों तक एक खुली नाव में सफर किया और रात के अँधेरे में क्यूबा के तट पर पहुँचा, फिर वह जंगल में गायब हुआ और तीन सप्ताह में टापू के दूसरे हिस्से पर पहुँचा। मैं आपको रोवन की वीरगाथा या कष्टकथा विस्तार से नहीं सुनाऊँगा। यह बहुत रोचक और रोमांचक कहानी है, लेकिन यहाँ मैं यह नहीं बताऊँगा कि रोवन एक शत्रु देश में इस छोर से उस छोर तक पैदल कैसे पहुँचा और कैसे उसने वह पत्र गार्शिया को सौंपा - ये सब बातें मैं आपको विस्तार से नहीं बताना चाहता हूँ। मैं आपको जो बताना चाहता हूँ और जो मुद्दे की बात है, वह यह है: मैकिनली ने रोवन को एक पत्र दिया, जो उसे गार्शिया तक पहुँचाना था। यह उसका मिशन था और उसे यह काम सफलतापूर्वक करना था।

रोवन ने उस पत्र को लेते समय यह नहीं पूछा, 'वह कहाँ पर है?' उसने यह नहीं पूछा, 'मैं उसे ढूँढ़ूँगा कैसे?' उसने यह नहीं पूछा, 'अगर दुश्मनों ने मुझे पकड़ लिया, तो क्या होगा?' उसने यह नहीं पूछा, 'मैं यहाँ सुख-चैन की जिंदगी जी रहा हूँ, मैं इतना खतरनाक काम करने के लिए अपनी जान जोखिम में क्यों डालूँ?' उसने यह नहीं पूछा, 'अगर मैं इतना मुश्किल काम कर देता हूँ, तो बदले में मुझे क्या पुरस्कार मिलेगा?' उसने यह नहीं पूछा, जो ज्यादातर लोग पूछते हैं, 'यह काम मैं ही क्यों करूँ? आप यह काम किसी और को क्यों नहीं सौंपते?' उसने एक भी मूर्खतापूर्ण सवाल नहीं पूछा। उसने बस अपने मिशन पर ध्यान केंद्रित किया।

वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि बॉस का काम मिशन बताना है और योजना बनाना कर्मचारी का काम है। कौन सा काम करना है, यह बॉस बताएगा। उस काम को कैसे फटाफट और अच्छी तरह करना है, यह सोचना कर्मचारी का काम है। प्रायः देखा गया है कि काम सौंपते समय कर्मचारी अपने बॉस से बहुत सारे मूर्खतापूर्ण सवाल पूछते हैं, जिनका उस काम से कोई संबंध नहीं होता। वे दरअसल उस काम को करने पर केंद्रित नहीं होते, बल्कि उस काम में आने वाली समस्याओं या बाधाओं पर केंद्रित होते हैं। यही कारण है कि ज्यादातर कर्मचारी हर काम को टालने या किसी दूसरे पर ढोलने की कोशिश करते हैं। सरकारी दफ्तरों में तो एक कहावत भी प्रचलित है, 'बने रहो पगले, काम करें अगले।' यानी अगर आप खराब काम करने की छवि बना लेते हैं, तो बॉस आपसे कोई काम करने को कहेगा ही नहीं और किसी दूसरे से काम कराएगा, जिसकी अच्छा काम करने की छवि होगी। यह सरकारी दफ्तरों में तो चल सकता है, लेकिन बाकी जगह नहीं चलता है। जब कोई 'करो या मरो' वाला काम आता है, तभी सबसे प्रतिभाशाली और योग्य कर्मचारी की पहचान होती है और सबसे ज्यादा पुरस्कार भी उसी को मिलते हैं। याद रहे, जब अमेरिका के राष्ट्रपति को गार्शिया तक पत्र पहुँचाना था, तो अमेरिका में लाखों कर्मचारी थे, लेकिन किसी दूसरे कर्मचारी ने उतनी तत्परता से, उतने आत्मविश्वास से, उतनी उपायकुशलता से उस काम का बीड़ा नहीं उठाया। रोवन ने बहाने बनाने या हीले-हवाले करने या कच्ची काटने या कामचोरी करने या काम टालने की कोई कोशिश नहीं की। काश इस संसार के सारे कर्मचारी ऐसे ही होते!

भगवान भला करे! इस आदमी की मूर्ति अमर काँसे में ढालना चाहिए और पूरे देश के हर कॉलेज में लगाना चाहिए। युवाओं को किताबी ज्ञान की जरूरत नहीं है। उन्हें भौतिकी या समाज शास्त्र के सिद्धांतों की इतनी जरूरत नहीं है, जितनी जीवन के सिद्धांतों को जानने की जरूरत है। आज का युवा जब नौकरी करने आता है, तो वह अपने ज्ञान के गर्व के साथ आता है और बड़े काम करना चाहता है। वह यह भूल जाता है कि जो काम सौंपा गया है, उसे ही उसे इतने जतन से करना चाहिए, मानो वह संसार का सबसे बड़ा काम हो। आपको कभी पता नहीं होता कि आपका काम कितना महत्वपूर्ण है या वह छोटा सा काम आपको आगे चलकर कितने महत्वपूर्ण जिम्मेदारी की ओर ले जाएगा या उस काम को सफलतापूर्वक करने के बाद आपको कितना पुरस्कार या अवसर मिलेंगे।

आज के युवाओं को विभिन्न विषयों पर कोरा ज्ञान हासिल करने की जरूरत नहीं है। उन्हें तो व्यावहारिक ज्ञान की जरूरत है। उन्हें तो जीवन के ज्ञान की जरूरत है। उन्हें अपनी रीढ़ मजबूत करने की जरूरत है, जिसकी बदौलत वे अपने बॉस के विश्वास पर खरे उतरें, काम को अपना धर्म समझें, तुरंत व उत्कृष्ट काम करें, अपनी ऊर्जाओं को केंद्रित करें। यानी कुल मिलाकर वे जब भी काम करेंगे, पूरी निष्ठा से काम करेंगे, पूरे दिल से काम करेंगे, वे वह सब करेंगे, जो उनसे करने को कहा गया है, यानी वे - 'गार्शिया का संदेश उस तक पहुँचाएँगे।'

कर्मचारी सौ प्रतिशत प्रयास नहीं करते

क्या आपने कभी कोई ऐसा काम करने की कोशिश की है, जिसमें कई कर्मचारियों के सहयोग की जरूरत पड़ी हो? अगर आपने की है, तो आपको कई बार आम आदमी की मूर्खता पर हैरानी हुई होगी। हो सकता है कि आप इस बात पर विचलित और क्रोधित भी हुए हों - वह किसी चीज पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता है या करना नहीं चाहता है। यह अयोग्यता या अनिच्छा आधुनिक समाज के महारोग से कम नहीं है। यह आलस ही नहीं है, जिसके वशीभूत वह कुछ करना नहीं चाहता है। यह तो चुनौती का सामना करने की अनिच्छा है। ज्यादातर लोग पाँच प्रतिशत प्रयास करके अपने करियर में सौ प्रतिशत सफलता हासिल करना चाहते हैं। यह तो वैसी ही बात है कि कोई दस कदम चढ़कर माउंट एवरेस्ट पर पहुँचने की उम्मीद करे। अगर आप संसार के सबसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना है, तो इसके लिए आपको बहुत सी बाधाओं को पार करना होगा और जीवट का परिचय देना होगा, तभी आप यह काम कर सकते हैं। जैसा रोवन ने किया था।

जब बॉस कोई काम बताता है, तो ज्यादातर कर्मचारी आधे कान और आधे ध्यान से उसके आदेश को सुनते हैं और 'यस सर' बोलकर बॉस के केबिन से बाहर निकल आते हैं। वे पूरी तरह यह समझने की जहमत ही नहीं उठाते हैं कि उनका बॉस दरअसल उनसे क्या कराना चाहता है। और जब आपको ठीक-ठीक पता ही नहीं होता कि आपका बॉस आपसे क्या चाहता है, तो आप काम को गलत करके ले आते हैं और फिर हैरान होते हैं कि बॉस आपको खामख्वाह क्यों डाँटता है और पहले से ही यह क्यों नहीं बताता कि वह आपसे क्या चाहता है। अगर वे पहली बार बताते समय ही पूरे ध्यान से सुन लेते, तो यह समस्या ही नहीं आती। देखिए, एक बात कान खोलकर सुन लें। आपको अपने एजेंडा पूरे करने के लिए नहीं, बल्कि अपनी कंपनी के एजेंडा पूरे करने के लिए नौकरी दी गई है। आपको अगर आपके बॉस या कंपनी ने नौकरी दी है, तो परोपकार करने के लिए नहीं दी है या इसलिए नहीं दी है, क्योंकि उसके पास जरूरत से ज्यादा पैसे हैं, जिन्हें वह गरीबों में बाँटना चाहता है। आपको नौकरी इसलिए दी गई है, ताकि आप वह काम करें, जो बॉस या आपकी कंपनी आपसे कराना चाहती है। रोवन को पूरी तरह से पता था कि उसका बॉस उससे क्या चाहता है और उसे कौन सा काम करना है। वह जानता था कि उसे 'गार्शिया तक पत्र पहुँचाना था... जल्दी से जल्दी।'

आधुनिक जीवन में इतने ज्यादा इलेक्ट्रॉनिक व्यवधान बढ़ चुके हैं कि लोगों को एकाग्र रहने में पहले से बहुत ज्यादा मुश्किल आती है। कारण चाहे जो हों, करियर में ज्यादातर समस्याएँ इसलिए आती हैं, क्योंकि हम सौ प्रतिशत प्रयास नहीं करते हैं, हम अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं करते हैं, हम काम को आखिरी समय तक टालते हैं। चिंता की बात यह है कि हम हाथ के काम पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं, लेकिन हम अपने राई बराबर प्रयासों के बदले में पहाड़ जितने पुरस्कार चाहते हैं और हमारी ज्यादातर रुचि हाथ के काम पर नहीं, बल्कि मिलने वाले पुरस्कार में होती है। यानी हम इनाम तो पाना चाहते हैं, लेकिन उसके लिए मेहनत नहीं करना चाहते। यानी हम अपनी वीरता की जय-जयकार तो सुनना चाहते हैं, लेकिन हम 'गार्शिया तक पत्र नहीं पहुँचाना चाहते।'

सौ प्रतिशत प्रयास करने की आवश्यक शर्त यह है कि आप अपना सबसे महत्वपूर्ण काम चुन लें और पूरे समय उसी पर ध्यान केंद्रित करें। इस तरह आप अनावश्यक बाधाओं से बच जाएँगे और आपको निर्णय लेने या विकल्प चुनने में भी आसानी रहेगी। आपका नंबर वन काम आपका ध्रुवतारा बन जाता है, जो समय के प्रबंधन में आपकी मदद करता है। जो भी चीज आपके नंबर वन काम में सहयोग नहीं करती है, उसे नहीं करेंगे। जो भी चीज आपके नंबर वन काम में सहयोग करती है, आप उसे करेंगे। अपने नंबर वन काम पर ध्यान दें। रोवन के लिए यह काम था 'गार्शिया को पत्र पहुँचाना।' आपका नंबर वन काम क्या है?

प्रमोशन क्यों नहीं मिलता है?

दुर्भाग्य से यह दुर्दशा किसी खास कंपनी या उद्योग तक सीमित नहीं है। यह तो हर कंपनी और हर उद्योग में देखी जा सकती है। अपने चारों ओर निगाह उठाकर देख लें। किसी भी कंपनी या व्यवसाय में देख लें। कर्मचारी फूहड़पन और लापरवाही से काम करते मिल जाएँगे। उनका ध्यान हँसी-मजाक, गपशप या मौज-मस्ती पर केंद्रित रहता है, अपने काम पर नहीं रहता। कर्मचारी बॉस की बुराई जितने उत्साह से करते हैं, उतने उत्साह से अगर अपना काम करने लगें, तो इस संसार की उत्पादकता रातोंरात दोगुनी हो जाए! लेकिन देखने में क्या आता है? कर्मचारी बेध्यानी से काम करते हैं, उदासीनता से काम करते हैं, मानो काम कोई कड़वी कुनैन हो, जो उनका बॉस उनके गले से नीचे उतार रहा हो। आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक यह है कि हम श्रम पर शर्म करने लगे हैं। श्रम से बचने के लिए इंसान ने आधुनिक मशीनें ईजाद कर ली हैं। लोगों को पैदल चलने में शर्म आती है, महिलाओं को झाड़ू-पोछा खुद करने में शर्म आती है, यहाँ तक कि आजकल तो कपड़े धोने या खाना बनाने में भी शर्म आने लगी है। कर्म को कभी पूजा माना जाता था, सफलता का आधारस्तंभ माना जाता था, लेकिन आजकल इसे हिकारत की निगाह से देखा जाता है। सफलता की परिभाषा आजकल यह हो गई है कि कौन कितना कम काम करके कितने ज्यादा पैसे कमाता है। आज की पीढ़ी को यह सिखाने की जरूरत है कि श्रम शर्म की चीज नहीं है, बल्कि सफलता की अनिवार्य शर्त है।

आजकल कर्मचारी पूरे दिल के बजाय आधे-अधूरे दिल से काम करते हैं। और आधे-अधूरे दिल से भी नहीं करते हैं! वे तो बस उतना ही काम करते हैं, ताकि उन्हें नौकरी से न निकाला जाए। यह सफल होने का तरीका नहीं है और कोई हैरानी नहीं कि ऐसे कर्मचारी सफल नहीं होते हैं। उन्हें प्रमोशन नहीं मिलता है और वे बाद में इस बात पर हैरान होते हैं कि उन्हें प्रमोशन क्यों नहीं मिला या उनकी तनख्वाह क्यों नहीं बढ़ी। वे अपने बॉस की बुराई करते हैं, कंपनी की नीतियों की बुराई करते हैं, भाई-भतीजावाद का आरोप लगाते हैं, लेकिन उस मुख्य चीज पर ध्यान ही नहीं देते हैं, जिसकी वजह से उनके बजाय किसी दूसरे को प्रमोशन मिला - वे पूरे दिल से काम नहीं कर रहे हैं और गार्शिया को संदेश पहुँचाने का बीड़ा नहीं उठा रहे हैं।

कामचोरी से सफलता नहीं मिलती

हम जानते हैं कि कोई भी व्यवसायी या मैनेजर अकेला सफल नहीं हो सकता। उसे दूसरे लोगों यानी कर्मचारियों के सहयोग की जरूरत होती है। जब कर्मचारी अति कामचोर और मक्कार हों, तो धमकी या रिश्वत या पैसे के इनाम का लालच देकर उन्हें सहयोग करने के लिए मजबूर करना पड़ता है। वैसे यह भी हो सकता है कि ईश्वर व्यवसायी या मैनेजर पर कृपा करके कोई चमत्कार कर दे और किसी फरिश्ते को कर्मचारी बनाकर भेज दे। लेकिन इसकी संभावना काफी कम है। प्रबंधन के क्षेत्र में 'गाजर और छड़ी' की प्रेरणा पर बहुत बातें होती हैं। आम भाषा में इसका मतलब यह है कि कर्मचारियों से काम कराने के लिए आपको या तो गाजर दिखाकर उसे ललचाना होगा या फिर छड़ी दिखाकर उसे डराना होगा। बॉस या तो पुरस्कार का लालच देकर कर्मचारी से काम कराता है या फिर दंड का भय दिखाकर उससे काम कराता है। आधुनिक युग में कर्मचारियों को प्रेरित करने के लिए मुख्यतः इन्हीं दो प्रेरणाओं का उपयोग किया जाता है। लेकिन इसकी जरूरत ही क्या है? कर्मचारी खुद ही इतना प्रेरित क्यों नहीं होता कि बॉस को गाजर या छड़ी की जरूरत ही न पड़े? आजकल हर चीज ऑटोमेटिक हो गई है, तो फिर प्रेरणा भी ऑटोमेटिक क्यों नहीं मिलती है? होना यह चाहिए कि बॉस जैसे ही हमें कोई काम बताए, हम उसे करने के लिए अपने आप प्रेरित हो जाएँ और हमें किसी बाहरी प्रेरणा की जरूरत ही न रहे। जो प्रेरणा अंदर से आती है, वह ज्यादा स्थायी और ज्यादा मूल्यवान होती है।

प्रिय पाठक, आप चाहे जहाँ रहते हों, इस बारे में खुद एक परीक्षण करके देख सकते हैं। मान लें कि आप इस समय अपने ऑफिस में बैठे हैं और आपके अधीन छह क्लर्क काम करते हैं। किसी एक को बुलाकर उससे यह आग्रह करें: 'कृपया जाकर एनसाइक्लोपीडिया देखें और मेरे लिए कोरेगियो के जीवन पर एक संक्षिप्त मेमोरैंडम बना दें।'

क्या वह क्लर्क आज्ञापालन करते हुए सहजता से 'यस सर' कहेगा और काम पूरा करने चला जाएगा?

आपकी जान की कसम, वह ऐसा कभी नहीं कहेगा, वह ऐसा कभी नहीं करेगा। उलटे वह आपको अजीब निगाहों से देखेगा, मानो आपने उससे कोई बेजा अनुरोध कर दिया हो, जैसे आपने उससे उसके दिल का एक पौंड गोश्त माँग लिया हो। वह चुपचाप 'यस सर' कहकर आज्ञापालन में नहीं जुटेगा। वह तो अपना मुँह खोलेगा और आपसे नीचे दिए एक या अधिक सवाल पूछेगा:

- 5 यह कोरेगियो कौन है?
- 5 कौन सा एनसाइक्लोपीडिया देखूँ?
- 5 एनसाइक्लोपीडिया कहाँ रखा है?
- 5 क्या मुझे यही काम करने के लिए नौकरी दी गई थी?
- 5 कहीं आपका मतलब बिस्मार्क से तो नहीं है?
- 5 यह काम चार्ली भी तो कर सकता है, उससे कराने में आपको क्या दिक्कत है?
- 5 क्या कोरेगियो मर गया है?
- 5 क्या कोई जल्दी है?
- 5 इससे अच्छा तो यह है कि मैं वह एनसाइक्लोपीडियो आपके पास ले आऊँ और आप खुद ही उसमें देख लें!
- 5 आपको यह जानकारी क्यों चाहिए?

5 मुझे वैसे भी इस काम के लिए नौकरी पर नहीं रखा गया था!

और मैं आपके एक डॉलर के बदले में अपनी तरफ से दस डॉलर की शर्त लगाने के लिए तैयार हूँ कि जब आप इन सवालों के जवाब दे देंगे और अपने बहस करने पर आमादा कर्मचारी को समझा देंगे कि जानकारी कैसे खोजना है और आप इसे क्यों चाहते हैं, तब भी वह क्लर्क उस काम को पूरे दिल से करने के इरादे से वहाँ से नहीं जाएगा। वह तो जाकर किसी दूसरे क्लर्क से मदद माँगेगा कि वह गार्शिया को खोजने में उसकी मदद करे - फिर वह लौटकर आएगा और आपको बताएगा कि उसे एनसाइक्लोपीडिया में कोरेगियो नाम का कोई इंसान नहीं मिला - यानी गार्शिया नहीं मिला। वह आपको कोस भी सकता है कि आपने एक ऐसे काम के लिए उसे इतना कष्ट दिया, जो किया ही नहीं जा सकता था। जाहिर है, मेरे शर्त हारने की थोड़ी आशंका तो है, लेकिन औसत के नियम के अनुसार मैं नहीं हारूँगा। मुझे आधुनिक कर्मचारियों की मनोवृत्ति पर पूरा विश्वास है कि वे कम से कम कष्ट में ज्यादा से ज्यादा पैसे चाहते हैं।

अब अगर आप समझदार हैं, तो आप अपने 'सहयोगी' को यह समझाने की जहमत नहीं उठाएँगे कि कोरेगियो 'के' में नहीं, 'सी' इंडेक्स में मिलेगा, बल्कि आप प्यार से मुस्कुराकर कहेंगे, 'कोई बात नहीं,' और खुद देखने चले जाएँगे। ज्यादातर बॉस इसी तरह से अपने कर्मचारियों के सामने घुटने टेक देते हैं और खुद उस काम को करने लगते हैं, जो उनके मातहतों को करना चाहिए। नतीजा यह होता है कि कर्मचारी कभी कुछ सीख नहीं पाते हैं और जीवन में तरक्की नहीं कर पाते हैं। बॉस का काम निर्णय लेना होता है, जो अपने आप में बहुत बड़ा काम है। लेकिन अगर बॉस अपना ज्यादातर समय उन कामों को करने में लगा देगा, जो उसके कर्मचारियों को करना चाहिए था, तो वह अपना काम कब करेगा? अगर आपको मेरी बात पर यकीन न हो, तो आप मैनेजरो से सर्वे कराकर देख लें। उनमें से आधे से ज्यादा लोग यही कहेंगे कि उनका सबसे बड़ा सिरदर्द यह है कि कर्मचारी काम करना ही नहीं चाहते हैं।

बहाने नहीं, उपाय खोजें

आज की तारीख में इंसान स्वतंत्र काम करने में सक्षम ही नहीं है। वह बैसाखियों की तलाश करता है। वह शॉर्टकट की तलाश करता है। सबसे बढ़कर वह दूसरे लोगों की तलाश करता है, जो उसके हिस्से का काम कर दें। सौंपे गए काम को न करने या टालने की आदत बुरी आदत है। इसे आधे-अधूरे मन से करने की आदत बुरी आदत है। शुरू से ही यह सोचने की आदत बुरी आदत है कि वह काम नहीं हो पाएगा। जब कर्मचारी पहले से ही सोच ले कि आपने उसे जो काम सौंपा है, वह उसे नहीं कर पाएगा, तो वह उस काम को सचमुच नहीं कर पाएगा। ऐसी स्थिति में कर्मचारी उस काम को करने के तरीके नहीं खोजता है, बल्कि उसे न करने के बहाने खोजने लगता है।

यह नकारात्मक नजरिया पूरे समाज में व्याप्त है और यह आधुनिक युग की एक बड़ी समस्या है। कर्मचारियों में काम करने की कोई इच्छा ही नहीं है, मेहनत करने का कोई इरादा ही नहीं है, काम को पूरा करने का संकल्प ही नहीं है, लेकिन इसके बावजूद उन्हें प्रमोशन चाहिए, वाहवाही चाहिए, श्रेय चाहिए। वैसे इन्हीं चीजों की वजह से समाजवाद के सितारे गर्दिश में हैं और यह कभी सफल नहीं हो सकता। जब आदमी खुद के लिए काम नहीं करना चाहता, जब वह खुद की प्रगति और प्रमोशन के लिए काम नहीं करना चाहता, तो वह तब काम क्यों करेगा, जब उसके काम से उसे व्यक्तिगत लाभ नहीं होगा, बल्कि पूरे समाज को लाभ होगा? इसीलिए एक सुपरवाइजर की जरूरत होती है, जो कर्मचारियों को डंडा करता रहे और डाँटता-फटकारता रहे और उनके काम पर नजर रखे। उस सुपरवाइजर की फटकार और छँटनी के डर की वजह से ज्यादातर कर्मचारी मजबूरी में काम करते हैं। वार्षिक कार्यसमीक्षा भी एक ऐसी ही छड़ी है, जिससे कर्मचारियों को काम करने के लिए डराया जाता है यानी प्रेरित किया जाता है। कई कंपनियों ने तो मासिक कार्यसमीक्षा भी शुरू कर दी है, ताकि कर्मचारियों को तात्कालिक प्रेरणा दी जा सके।

गौर करें, जब रोवन को गार्शिया तक पत्र पहुँचाने का काम सौंपा गया, तो वह बहाने बना सकता था और उसके कई बहाने जायज भी होते! क्यूबा इतना बड़ा देश है, इसमें वह गार्शिया को कहाँ खोजेगा? पहाड़ दूसरी तरफ हैं, जहाँ गार्शिया के छिपे होने की अफवाह फैली है, वह पैदल इतना लंबा सफर कैसे तय करेगा? क्यूबा का अमेरिका से युद्ध चल रहा है और अगर क्यूबा के लोगों ने उसे देख लिया और बंदी बना लिया, तो क्या होगा? रोवन ये सब बहाने बना सकता था, लेकिन उसने एक भी बहाना नहीं बनाया। इसके बजाय उसने काम को करने के तरीके खोजे, अपनी बुद्धि पर भरोसा किया, अपनी योग्यता पर भरोसा किया, अपनी उपायकुशलता पर भरोसा किया और अपने ईश्वर पर भरोसा किया। अगर आप अपने करियर में तरक्की करना चाहते हैं, तो आपको भी यही करना होगा। काम न करने के बहाने न खोजें; काम करने के तरीके खोजें।

योग्यता सफलता की अनिवार्य शर्त है

अगर आप एक स्टेनोग्राफर का विज्ञापन दें, तो क्या होगा? आपके पास बहुत से आवेदन आएँगे। लेकिन मैं उनके की चोट पर कह सकता हूँ कि दस में से नौ उम्मीदवारों को न तो स्पेलिंग का ज्ञान होगा, न ही व्याकरण का; और तो और उन्हें टाइपिंग का भी ज्ञान नहीं होगा। और मजे की बात यह है कि उन्हें यह लगता ही नहीं है कि उनमें यह ज्ञान होना चाहिए। वे यह मानकर चलते हैं कि ज्ञान या योग्यता के बिना ही उन्हें नौकरी मिल जानी चाहिए और सफलता मिल जानी चाहिए।

क्या ऐसा व्यक्ति गार्शिया को पत्र लिख सकता है?

एक बड़ी फैक्ट्री के फोरमैन ने मुझसे कहा था, 'आप उस बुककीपर को देख रहे हैं?'

मैंने कहा, 'हाँ, क्यों क्या हुआ?'

'देखिए, वह अकाउंटेंट तो अच्छा है, लेकिन अगर मैं उसे किसी काम से शहर के दूसरे हिस्से में भेज दूँ, तो एक तरफ तो यह संभावना है कि वह उस काम को कर देगा। लेकिन दूसरी तरफ यह आशंका भी रहती है कि वह रास्ते में किसी बियर बार में घुस जाएगा और जब तक वह शहर के दूसरे हिस्से में पहुँचेगा, वह यही भूल जाएगा कि उसे किस काम के लिए भेजा गया था।'

क्या गार्शिया को संदेश भेजने के लिए ऐसे आदमी पर भरोसा किया जा सकता है?

बिलकुल नहीं किया जा सकता। गार्शिया तक संदेश देने के लिए तो ऐसे आदमी पर भरोसा किया जा सकता है, जो अपने लक्ष्य के प्रति इतना समर्पित हो कि उसमें रास्ते में आने वाले तमाम प्रलोभनों से बचकर निकलने का आत्मबल हो। इसके लिए तो ऐसे आदमी पर ही भरोसा किया जा सकता है, जो हर पल अपने लक्ष्य की दिशा में बढ़ने पर ध्यान केंद्रित कर रहा हो, चाहे वह लक्ष्य कोई भी हो। अगर गार्शिया तक पत्र पहुँचाना है, तो रास्ते में पड़ने वाले बियर बार में बैठने से उससे कोई मदद नहीं मिलेगी, इसलिए वह यह काम कभी नहीं करेगा। काम पूरा होने तक वह सारे समय उसी काम को करने के तरीके खोजेगा और उसी काम के बारे में सोचता रहेगा। वह तब तक चैन की साँस नहीं लेगा, जब तक कि वह सफलतापूर्वक काम को पूरा न कर दे।

आप ही बताएँ, अगर आप बॉस हों, तो आप किस कर्मचारी को तरक्की देंगे? उसे, जो काम को पूरी लगन और एकाग्रता और उत्कृष्ट से करता है! या फिर उसे, जो काम को टालता है, कामचोरी दिखाता है या काम से जी चुराता है! खुद को अपने बॉस की जगह रखकर देखें! अगर आप अपने बॉस के दृष्टिकोण को समझ जाते हैं और उसके नजरिये से चीजों को देखने लगते हैं, तो आप यह भी समझ जाएँगे कि अपने करियर में सफल होने के लिए आपको किस तरह काम करना है।

अपनी प्रगति या छँटनी के लिए आप खुद जिम्मेदार हैं

‘दमित-शोषित मजदूरों’ के बारे में काफी सहानुभूति जताई जाती है। ‘रोजगार की तलाश में भटक रहे बेघर लोगों’ के बारे में काफी आँसू बहाए जाते हैं। इस बहाने से सत्ता में बैठे लोगों को कोसा भी जाता है, जो गरीबों की तरफ ध्यान नहीं दे रहे हैं और उनके जीवन की परिस्थितियों को बेहतर करने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। सच तो यह है कि सत्ता में बैठे लोग कुछ कर रहे हों या न कर रहे हों, लेकिन मजदूर या बेघर लोग भी अपनी दशा को बेहतर बनाने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। जब उनके पास नौकरी थी, तब उन्होंने मेहनत से काम नहीं किया और मक्काारी की, जिस वजह से उनकी छँटनी कर दी गई। वे सरकार को गालियाँ देते हैं, कंपनी को कोसते हैं और बॉस को भला-बुरा कहते हैं, लेकिन वे उस एक इंसान को कुछ नहीं कहते हैं, जो उनकी छँटनी के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार था - वे खुद! उन्होंने अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारी थी। उन्हें नौकरी मिली थी, उस नौकरी में सफल होने का अवसर मिला था, लेकिन उन्होंने कामचोरी करके उस अवसर का लाभ नहीं उठाया और इसी की वजह से वे फुटपाथ पर आ गए।

ज्यादातर नौजवान, चाहे वे नौकरी में हों या न हों, अपनी योग्यताएँ नहीं बढ़ाते हैं, इसलिए उन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती है। वे यह भूल जाते हैं कि उनके पास भी वही अवसर है, जो बाकी सबके पास है, लेकिन वे उन अवसरों का लाभ नहीं लेते हैं। रात सबके पास होती है। एक इंसान रात को चार घंटे टी.वी. देख सकता है, दूसरा इंसान उन्हीं चार घंटों में अपनी योग्यताओं को बढ़ाने की मेहनत कर सकता है। शाम सबके पास होती है। एक इंसान शाम को बियर बार में अपनी सेहत के नाम जाम पीकर अपनी सेहत खराब कर सकता है। दूसरा इंसान शाम को ऑफिस में ज्यादा देर तक रुककर अपने करियर को आगे बढ़ा सकता है।

मजदूरों और बेरोजगारों की दुर्दशा को लेकर आँसू बहाने वाले तो बहुत मिल जाएँगे, लेकिन व्यवसाय मालिकों के बारे में सोचने वाला कोई नहीं है। बहुत से व्यवसायी समय से पहले ही बूढ़े हो गए हैं, क्योंकि उन्होंने मक्कार और कामचोर कर्मचारियों से काम कराने की निरर्थक कोशिश की। उन्होंने अपने ‘सहायकों’ को लाख बार समझाया, करोड़ों बार आग्रह किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। कर्मचारी तभी तक काम करते हैं, जब तक बॉस उनकी पीठ पर सवार रहता है। ‘सावधानी हटी, दुर्घटना घटी’ कहावत की तरह जैसे ही बॉस की नजर हटती है, उनकी मक्काारी और कामचोरी शुरू हो जाती है। पहली बात तो यह है कि वे काम करते ही नहीं हैं। अगर करना पड़ जाए, तो अच्छे से नहीं करते हैं, बल्कि कामचलाऊ ढंग से करते हैं। वे काम को ऐसे निबटाते हैं, जैसे उनकी कनपटी पर रिवॉल्वर रखकर उनसे जबरन वह काम मजबूरी में कराया जा रहा हो। ऐसे लोग करियर में सफल नहीं होते हैं। करियर में सफल होने वाले लोग रोवन की तरह होते हैं, जो अनावश्यक प्रश्न नहीं पूछते हैं, काम की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं और फिर उसे करने के तरीके खोजते हैं, जो अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए हर आवश्यक त्याग करते हैं, जो जोखिमों का सामना करते हैं और तब तक चैन से नहीं बैठते हैं, जब तक कि उनका काम पूरा नहीं हो जाता और अच्छी तरह नहीं हो जाता। व्यवसाय में केवल उत्कृष्ट काम की पूछ-परख होती है। कामचलाऊ काम कोई नहीं चाहता। एक बात का उत्तर दें: मान लें कि आप किसी कंपनी के मालिक हैं और आपको दो कर्मचारियों में से किसी एक को नियुक्त करना है, जिनमें से एक कामचलाऊ काम करता है और दूसरा उत्कृष्ट काम करता है, तो आप किसे नौकरी देंगे? अगर आप अपने करियर में तरक्की करना चाहते हैं, तो इस सवाल के उत्तर को याद रखें।

किन कर्मचारियों की छँटनी होती है?

व्यवसाय की दुनिया में छँटनी समय-समय पर होती रहती है। हर स्टोर और फैक्ट्री में खरपतवार की छँटनी की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। नियोक्ता 'सहायकों' को लगातार नौकरी से निकालते रहते हैं, जिन्होंने यह दिखा दिया है कि वे व्यवसाय या कंपनी के हितों को आगे बढ़ाने में सक्षम नहीं हैं। नियोक्ता ढीले कर्मचारियों को नौकरी से निकालकर नए कर्मचारी रखते हैं और आशा करते हैं कि इस बार उनका निर्णय सही हो।

अच्छी से अच्छी अर्थव्यवस्था में भी छँटनी की यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। जब मंदी का दौर आता है, जब बेरोजगारी बढ़ जाती है, जब मुश्किल समय आता है, तो छँटनी ज्यादा बड़े पैमाने पर होने लगती है। लेकिन एक खास बात पर गौर करें। हमेशा अक्षम, कामचोर और निकम्मे लोगों को ही बाहर निकाला जाता है। हमेशा उन्हीं लोगों पर पहले गाज गिरती है, जो मेहनत से बचते हैं, जो मुश्किल काम नहीं करना चाहते हैं और जो गार्शिया तक संदेश नहीं पहुँचाना चाहते हैं। यह सरवाइवल ऑफ द फिटिस्ट वाला मामला है।

कारोबारी जगत में सबसे योग्य या श्रेष्ठ व्यक्ति ही सबसे ज्यादा तरक्की करता है। अपने हितों को ध्यान में रखते हुए हर व्यवसायी या कंपनी यही चाहती है कि यह केवल सर्वश्रेष्ठ कर्मचारियों को ही अपने यहाँ रखे - उन्हीं लोगों को रखे, जो गार्शिया तक संदेश पहुँचा सकें। कंपनी यह चाहती है कि इसके कर्मचारी अपने स्वार्थों के बजाय कंपनी के हितों के बारे में सोचें। कंपनी यह चाहती है कि इसके कर्मचारी यह न सोचें: कंपनी मुझे क्या दे सकती है। इसके बजाय यह चाहती है कि कर्मचारी यह सोचें: मैं कंपनी को क्या दे सकता हूँ? आज उपायकुशलता की जितनी ज्यादा जरूरत है, उतनी कभी नहीं रही। आज नवाचार और नए विचारों की जितनी ज्यादा जरूरत है, उतनी कभी नहीं रही। लेकिन दुर्भाग्य से ज्यादातर कर्मचारी इस दिशा में कभी कुछ करते ही नहीं हैं। वे कंपनी के हित में न तो कुछ करते हैं, न ही अपने दिमाग पर जोर डालकर इसकी तरक्की के लिए नए विचार सोचते हैं।

मैं एक बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति को जानता हूँ, जो व्यवसाय का प्रबंधन नहीं कर सकता और केवल कर्मचारी के रूप में ही काम कर सकता है। लेकिन यह प्रतिभाशाली व्यक्ति किसी भी व्यवसाय या कंपनी में सफल नहीं हो पाता है और अपनी प्रतिभा से उसे लाभ नहीं पहुँचा पाता है, क्योंकि उसके मन में लगातार यह पागलपन भरी शंका रहती है कि उसका नियोक्ता उसका दमन और शोषण करता है या भविष्य में करेगा। वह खुद को निरीह और बेबस मानता है। वह बॉस को दबंग और निरंकुश और तानाशाह मानता है। वह ऑफिस के भीतर इतनी अनिच्छा से घुसता है, जैसे हिटलर के गैस चैंबर में घुस रहा हो। वह अपने बॉस के आदेश न सुनता है, न मानता है। बस हमेशा भुनभुनाता रहता है और बड़बड़ाता रहता है और अपने साथियों के साथ मिलकर बॉस के नए निरंकुश आदेश की बुराई करता रहता है। अगर उसे गार्शिया तक संदेश पहुँचाने को दिया जाए, तो उसका जवाब शायद यह होगा, 'इसे आप खुद ही ले जाएँ!'

आज रात यह आदमी नौकरी की तलाश में सड़कों पर भटक रहा है। हवा उसके सूराखों वाले कोट में सीटी बजा रही है। उसकी जान-पहचान का कोई भी व्यवसायी उसे नौकरी नहीं देगा, क्योंकि वह जिस भी कंपनी में जाता है, वहाँ असंतुष्टि, असंतोष और अशांति फैलाता रहता है। तर्क का उस पर कोई असर नहीं होता है। उस पर तो सिर्फ एक ही चीज का असर होता है - मोटे सोल वाले नौ नंबर के जूते का आगे का हिस्सा।

उद्यमी कर्मचारी कंपनी की धुरी होते हैं

जाहिर है, मैं जानता हूँ कि यह इंसान नैतिक दृष्टि से विकृत है, इसलिए उस पर उतना ही तरस खाना चाहिए, जितना कि शारीरिक दृष्टि से अपंग किसी व्यक्ति पर खाना चाहिए। लेकिन इसके साथ ही हमें कुछ आँसू उन लोगों के लिए भी बहाना चाहिए, जो कोई बड़ा काम करने की कोशिश कर रहे हैं, जिनके कामकाज के घंटे सीटी या घड़ी तक ही सीमित नहीं होते, जे दिन को दिन नहीं समझते और रात को रात नहीं समझते, बल्कि अपनी तथा अपनी कंपनी की प्रगति के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं, खून-पसीना एक करते हैं और अपने करियर को आगे बढ़ाने की खातिर व्यक्तिगत त्याग करने से नहीं हिचकते हैं।

जाहिर है, ऐसे चंद लोगों के बाल तेजी से सफेद हो रहे हैं, क्योंकि उन्हें उन लोगों के हिस्से का भी काम करना पड़ता है, जो उदासीन हैं, जो मेहनत नहीं करना चाहते हैं, जो कृतघ्न हैं और कंपनी तथा बॉस की हमेशा बुराई करते रहते हैं। यहाँ एक बात याद रखना मुनासिब होगा: ये चंद मेहनती और उद्यमी लोग ही हैं, जिनकी बदौलत वह कंपनी या व्यवसाय कायम है। अगर ये चंद प्रगतिशील और उद्यमी कर्मचारी कंपनी में न रहें, तो कंपनी जल्दी ही दिवालिया हो जाएगी, जिस वजह से उदासीन, कामचोर और कामटालू लोगों की नौकरी चली जाएगी और वे बेरोजगार, भूखे तथा बेघर हो जाएँगे तथा अपने दुर्भाग्य को कोसते रहेंगे।

आज तक एक भी कंपनी ऐसी नहीं हुई, जो मक्कार कर्मचारियों की बदौलत सफल हुई हो। इस संसार की हर कंपनी हमेशा उद्यमी कर्मचारियों की बदौलत ही सफल होती है। कोई भी कंपनी तभी तरक्की करती है, जब इसे कर्मचारी अपने पसीने से सींचते हैं। और व्यवसाय में मालिक का मुख्य कर्तव्य यह होता है कि वह अपनी कंपनी के कर्मचारियों का विश्लेषण करके खरपतवार को समय-समय पर उखाड़ता रहे और ऐसे नए कर्मचारियों को नियुक्त करे, जो अपने पसीने से कंपनी को सींचने को तैयार हों।

क्या मैं इस मुद्दे पर जरूरत से ज्यादा भावावेश में बह गया हूँ? शायद हाँ, लेकिन जब सारा संसार असफल लोगों की हिमायत कर रहा है और उन्हें सहानुभूति दे रहा है, तो मैं उस व्यक्ति के लिए सहानुभूति के शब्द बोलना चाहता हूँ, जो सफल होता है और होना चाहता है। मैं पाले में दोनों तरफ रहा हूँ, इसलिए मुझे यह कहने का हक है। मैंने डिनर की बाल्टी उठाई है और दिन में मजदूरी की है। मैंने कुछ मजदूरों को नौकरी भी दी है। अपने अनुभव से मैं यह बात जानता हूँ कि दोनों पक्षों की तरफ से बहुत कुछ कहा जा सकता है। मेरा दृष्टिकोण यह है कि कर्मचारी अपने बॉस या मालिक की बुराई जितने उत्साह से करते हैं, अगर उतने उत्साह से वे काम करें, तो उन्हें सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। कर्मचारियों को लगता है कि उनके बॉस के पक्षपात की वजह से वे करियर में तरक्की नहीं कर पा रहे हैं। वे यह सच्चाई देख ही नहीं पाते हैं कि उनकी कामचोरी और उनकी प्रगतिहीनता की वजह से उन्हें तरक्की नहीं मिल रही है। एक बात का ध्यान रखें: गरीबी में कोई उत्कृष्टता नहीं होती; फटे चिथड़े पहनना कोई गौरव की बात नहीं है; और जिस तरह सारे गरीब लोग सद्गुणी नहीं होते हैं, उसी तरह सारे व्यवसायी भी लालची और जालिम नहीं होते हैं।

क्या आप गार्शिया तक संदेश पहुँचा सकते हैं?

मेरा हृदय उस व्यक्ति की बढ़ाई करता है, जो 'बॉस' के दूर रहने पर भी अपना काम करता है, तब भी जब वह घर पर होता है, तब भी जब वह कंपनी के फायदे के लिए रात भर जागकर किसी प्रोजेक्ट को पूरा करता है। जब इस आदमी को गार्शिया तक पहुँचाने के लिए पत्र दिया जाता है, तो वह चुपचाप उसे लेता है, कोई मूर्खतापूर्ण सवाल नहीं पूछता है और उसे सबसे पास वाले गटर में फेंकने का कोई इरादा नहीं रखता है या इसे पहुँचाने के संदर्भ में हीले-हवाले करने या बहाने बनाने के बारे में नहीं सोचता है। ऐसे कर्मचारी को कभी 'छँटनी' में नहीं निकाला जाता है, न ही उसे प्रमोशन या ज्यादा वेतन की माँग करने के लिए हड़ताल पर जाना पड़ता है। मानव सभ्यता ऐसे ही कर्मचारियों की लंबी और व्यग्र खोज है। ऐसा कर्मचारी जो भी माँगेगा, वह उसे दिया जाएगा। ऐसा इंसान इतना दुर्लभ होता है कि कोई भी कंपनी या बॉस उसे दूर नहीं जाने देगा। ऐसे व्यक्ति की माँग हर शहर, कस्बे और गाँव में है - ऐसे व्यक्ति की माँग हर ऑफिस, दुकान, स्टोर और फैक्ट्री में है।

संसार ऐसे लोगों की लगातार तलाश कर रहा है: उस आदमी की जरूरत है और सख्त जरूरत है - जो गार्शिया तक संदेश पहुँचा दे!

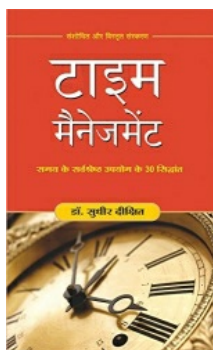
एमेज़ॉन पर समीक्षा लिखें

यदि आपको यह पुस्तक पसंद आई हो, तो एमेज़ॉन पर समीक्षा लिखें और स्टार रेटिंग दें।

[CLICK HERE TO LEAVE A REVIEW ON AMAZON!](#)

Other Hindi Kindle Books by Dr. Sudhir Dixit

टाइम मैनेजमेंट (Revised and Expanded edition) (Hindi) Kindle Edition



हम सबके पास एक दिन में 24 घंटे होते हैं। न किसी के पास इससे कम होते हैं, न ज़्यादा। इन 24 घंटों का हम जैसा उपयोग करते हैं, उसी से हमारी सफलता का स्तर होता है। डा. सुधीर दीक्षित की इस पुस्तक में समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने के 30 अचूक सिद्धांत बताए गए हैं। इस पुस्तक में दिए गए सिद्धांतों पर अमल करें और शिखर पर पहुँचें।

[Safalta ka Achook Formula \(Hindi Edition\) Kindle Edition](#)



मेरा बेटा अपना करियर शुरू करने की कगार पर है। एक दिन जब मैं उसे जीवन में सफल होने के फॉर्मूले बता रहा था, तो मैंने उसे दर्जनों बातें गिना दीं। इस पर वह बोला, 'आपके बताए सभी फॉर्मूले अच्छे हैं। दिक्कत यह है कि ये बहुत सारे हैं और इन्हें याद रखना संभव नहीं है। आप तो मुझे सफलता का बस एक फॉर्मूला बता दो, जो अचूक हो। एक ऐसा फॉर्मूला, जो हमेशा याद रहे, जिस पर कोई भी अमल कर सके और जिसके सफल होने की गारंटी हो।'

नतीजा है यह फॉर्मूला! यह फॉर्मूला चैंपियन बनने का वह फॉर्मूला है, जिसका इस्तेमाल करके ही इंसान सफलता के शिखर पर पहुँचता है। चाहे बिल गेट्स हों या वॉरेन बफेट या स्टेफनी मेयर या जे.के. रोलिंग, वे सभी इसी फॉर्मूले पर चलकर अपने क्षेत्र में चैंपियन बने हैं। यह फॉर्मूला आपको किसी भी क्षेत्र में चैंपियन बना सकता है... इस फॉर्मूले पर चलकर आप अच्छा स्वास्थ्य हासिल कर सकते हैं, अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बना सकते हैं, अपनी बिक्री बढ़ा सकते हैं, अपने करियर में तरक्की कर सकते हैं, अपने प्रेमसंबंध में सफल हो सकते हैं, अपने वैवाहिक संबंध को ज़्यादा सुखद बना सकते हैं यानी कुल मिलाकर आप किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकते हैं। यह तरक्की की वह चाबी या मास्टर की है, जिससे किसी भी क्षेत्र में सफलता का ताला खुल जाएगा।

[Safalta Shabdon Ka Khel Hai \(Hindi Edition\) Kindle Edition](#)

सफलता शब्दों का खेल है

डॉ. सुधीर दीक्षित

संवाद में माहिर बनें मिनटों में

चाहे आप शिक्षक हों या सेल्समैन, मैनेजर हों या माता-पिता, संवाद कौशल में माहिर होना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है, क्योंकि भाषा ही हमें एक दूसरे से जोड़ती या दूर करती है। संवाद कला में माहिर बनने के लिए आपको भाषा संबंधी 9 बुनियादी सिद्धांतों को जानने, संवाद प्रक्रिया के 6 पायदानों को समझने और संवाद कौशल के 8 सूत्रों पर अमल करने की जरूरत है। यह पुस्तक आपको बताएगी कि आप दूसरों की बातें सुनकर उनका सही अर्थ कैसे समझें। यह पुस्तक आपको बताएगी कि आप अपनी बात कैसे कहें, ताकि लोग उनका सही अर्थ समझ जाएँ। यह पुस्तक आपको शब्दों का विशेषज्ञ बनाए न बनाए, उनका कुशल खिलाडी जरूर बना देगी।